वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

दिनांक – 03.08.2022

"लाह उत्पाद-रोजगार का साधन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण

स्थान-रोड़,तोरपा(खूंटी),झारखण्ड

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान के वैज्ञानिक डा. आदित्य कुमार के नेतृत्व में श्री एस.एन.वैद्य, मु.त.अ., श्री बी.डी.पंडित त.अ. एवं श्री सूरज कुमार, व.त.स. के एक दल द्वारा दिनांक 03.08.2022 को तोरपा प्रखण्ड (खूंटी) के रोड़ो ग्राम में "लाह उत्पाद-रोजगार का साधन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे औंकारा ग्राम पंचायत के मुखिया श्री बुधराम कण्डुलना सहित लगभग 45 ग्रामीणो ने भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुखिया श्री बुधराम कण्डुलना ने वन उत्पादकता संस्थान की सराहना करते हुए बताया कि इस तरह के कार्यक्रम ग्रामीण आजीविका सृजन में सहायक होगा तथा ग्रामीणों को इसमे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। दीनदयाल उपाध्याय ग्राम स्वालम्बन योजना के श्री सुनील कुमार शर्मा ने ग्रामीणो से आग्रह किया कि पिछले समय में लाह की खेती होती रही है तथा वर्तमान तकनीकी को समझकर रोड़ो गांव को इसमे अग्रणीय बनाना है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुये श्री बी.डी. पंडित, तकनीकी अधिकारी ने आज के कार्यक्रम का परिचय एवं कृषि -वानिकी परियोजना के साथ लाह खेती को बढ़ावा देने के लिये डा. आदित्य कुमार का धन्यवाद किया एवं परियोजना का विस्तृत विवरण के लिय आग्रह किया।

डा.आदित्य कुमार ने रोड़ो ग्राम में फ्लेमेंजिया सेमियालता रोपण के कारणों को विस्तार से समझाया। उन्होने बताया कि आज उपलब्ध लाह के विशेषज्ञों से तकनीकी सीखकर फ्लेमेंजिया सेमियालता पर लाह खेती करें एवं अपना आय वर्धन करें।

संस्थान के वैज्ञानिक डा. आदित्य कुमार ने इस गांव के लिए चलाये जा रहे परियोजना में तीनों ग्रामीण दुभराज सिह, रेवती देवी, मीना कंडीर द्वारा तैयार गड्ढे में यथा शीघ्र पौध रोपण की बात कही। डा. आदित्य कुमार ने बताया कि रोड़ो ग्राम में लगभग 100 परिवार है और धीरे-धीरे ईच्छुक किसानों के खेतों में फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती को बढ़ावा दिया जायेगा।

"लाह उत्पाद-रोजगार का साधन"
विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण

दिनांक – 03.08.2022

संस्थान के श्री एस.एन.वैद्य ने लाह उत्पाद,उपयोग एवं मूल्यवर्धन पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया। उन्होने बताया कि लाह एक जैविक उत्पाद होने के कारण विश्व में इसकी मांग है।

संस्थान के श्री बी.डी.पंडित त.अ. ने लाह की खेती को लाह कीट पालन बताते हुए कलम करना, बीजारोपण, फूंकी उतारना , कीट नाशक, फफूंद नाशक का छिड़काव, लाह कटाई आदि प्रत्येक प्रक्रिया को विस्तार से समझाया एवं उसके लिये समय सारणी भी बताया। उन्होने बताया कि फ्लेमेंजिया पर लाह की खेती करने के लिए उस क्षेत्र में कुछ कुसमी पेड़ आवश्यक है ताकि अपना स्वयं का बीज उपलब्ध हो सके। लाह कीट का जीवन चक्र, कीट निर्गमन, मर्द/मादा कीट का निर्गमन का समय एवं उपचार भी चर्चा की। उन्होने बताया कि नर कीट निर्गमन के समय कभी भी कीट नाशक का छिड़काव नही किया जाना चाहिए। फ्लेमेंजिया सेमियालता पर लाह कीट पालन एवं रोपण तकनीक को भी समझाया। कार्यक्रम को सूरज कुमार ने भी सम्बोधित किया। बैठक में किसानों ने पुन: पलास, बेर, कुसुम तथा सेमियालता पर लाह की खेती करने की इच्छा जाहिर की। श्री रवीश कुमार दीनदयाल उपाध्याय ग्राम स्वालम्बन योजना के सदस्य ने भी अपना विचार रखा।

इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डा. आदित्य कुमार,वैज्ञानिक-ई, श्री एस.एन.वैद्य, मु.त.अ., श्री बी.डी.पंडित त.अ. एवं श्री सूरज कुमार,व.त.स. का सराहनीय योगदान रहा।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)